

दिनांक 4 दिसंबर, 1984

म. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33333--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं महेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा, बहालगढ़ (सोनीपत) के श्रमिकों ने अवृत्त विद्युत वा उत्तर प्रवान्धकों के बीच इसमें इयरे बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय द्वारा निर्दिष्ट भरना चाहनीय समझते हैं;

इसलिए, अब ग्रोथोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अप्र०/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-अप०-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों द्वारा दोनों विवादप्रस्त भागों हैं या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भागों हैं।—

क्या श्री प्रह्लाद सिंह बों सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठाक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है?

म. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33840--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं महेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा, बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री किशोरी लाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट भरना चाहनीय समझते हैं;

इस लिए, महेश ग्रोथोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 के उपचारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अप्र०/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-अप०-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त भागों हैं या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भागों हैं।—

क्या श्री किशोरी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठाक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है?

सं. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33847--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं नहेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री कंचन प्रसाद तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इसलिए, अब ग्रोथोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 के उपचारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अप्र०/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.ई.-अप०-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त भागों हैं या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भागों हैं।—

क्या श्री कंचन प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठाक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हक्कार है?

सं. श्री. वि./सोनीपत/88-84/33854--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं महेश बुड़ प्रोडक्ट्स प्रा० लि०, खेड़ा बहालगढ़ (सोनीपत), के श्रमिक श्री राम किशोर तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोथोगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चाहनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल द्वारा उपधारा 10 की अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना नं. 3361-ए.प.ओ. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन पठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों द्वारा विवादपत्र भागला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।

वया श्री रम विजयन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

एम. के. महेश्वरी,
संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार,
अम विभाग।

दिनांक 3 रितम्बर, 1984

स. ओ.वि./सोनीपति/194-84/33508.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं आरर्गनो रवड़ प्रालि, इण्डरट्रीयल ऐंजिनीयों, सोनीपति के अधिक श्री शिव नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के द्वारा इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद

और चूकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं :

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा प्रकाशे अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना नं. 3361-ए.प.ओ. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन पठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों द्वारा विवादपत्र भागला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।

वया श्री शिव नाथ की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ओ.वि./सोनीपति/194-84/33516.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मेटाकेम इण्डस्ट्रीज खेवड़ा, रोड, घहाल-गहा, सोनीपति के अधिक श्री गोपाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के द्वारा इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

और चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा प्रकाशे अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3361-ए.प.ओ. (ई)-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन पठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादपत्र या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों द्वारा विवादपत्र भागला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ;—

वया श्री गोपाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. ओ.वि./सोनीपति/194-84/33522.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मेटाकेम इण्डस्ट्रीज, खेवड़ा, रोड, घहाल-गहा, सोनीपति के अधिक श्री रामकेश कुमार भारा तथा उसके प्रबन्धकों के द्वारा इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

और चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई

गतियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी म. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3364-ए.स.ओ. (ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को लिखा गया था। उसमें सूचना दी गई लिखा मामला न्यायिक रूप से उक्त विवादप्रस्त भागभाई है जो कि उक्त प्रकार संतान अधिक रूप से बीच आ गया है। विवादप्रस्त भागभाई है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।—

यद्या श्री राकेश कृष्णराम सर्मार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

म. श्री पि./मोनीपन/ 194-8/ 33529.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की धारा 10 के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3854-ए.स.ओ. (ई) 70/1318, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सूचना दी गयी थी। उसके बाद लिखा मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद

प्रारंभिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं;

इसनिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम 1947, की धारा 10 के उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3854-ए.स.ओ. (ई) 70/1318, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सूचना दी गयी थी। उसके बाद लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हुए जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच आ गया तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।—

यद्या श्री भूरा मल वर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

(प्रो. पि.) गोडाना/ 166-5/ 33536.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की धारा 10 के उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3864-ए.स.ओ. (ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सूचना दी गयी थी। उसके बाद लिखा मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है:

मोर तकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं;

(प्रो. पि.) गोडाना/ 166-5/ 33503.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की धारा 10 के उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3864-ए.स.ओ. (ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सूचना दी गयी थी। उसके बाद लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हुए जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच आ गया तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।—

यद्या श्री शान्ति स्वरूप की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 4 सितम्बर, 1984

म. श्री पि./मोनीपन/ 194-8/ 33503.—कृकि हरियाणा के राज्यपाल की धारा 10 के उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3864-ए.स.ओ. (ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सूचना दी गयी थी। उसके बाद लिखा मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

आर तकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बाढ़नीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम 1947, की धारा 10 के उपधारा (1) के छण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिकारी सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवंबर, 1970, के पात्र पटित सरकारी अधिकारी सं. 3864-ए.स.ओ. (ई) 70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7(के प्रयोग सहित श्रम व्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सूचना दी गयी थी। उसके बाद लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच आ गया तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है।—

यद्या श्री पंचानन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?